WORLD खबर एक्सप्रेस
कानपुर
बुधवार, 01-12-2021
02

सीएसए ने विकसित की गेहूं, सरसों व अलसी की नई किस्में

वैज्ञानिकों का दावा- फसलों को रोगों से बचाने, ऊसर व बंजर भूमियों में होंगी कारगर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने गेहूं, सरसों और अलसी के बेहतर बीज विकसित किए हैं। यह फसल को रोगों से बचाने के साथ-साथ प्रदेश के वातावरण के अनुकूल हैं। कुलपति डॉ. डीआर सिंह के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने इन विशेष प्रकार के बीजों को विकसित कर इतिहास रचा है। इन प्रजातियों के विकसित होने से किसानों की बेहतर आय व फसलों की सुरक्षा का और भरोसा बढ़ेगा। विकसित की गई फसलों की प्रजातियों में गेहूं की के-17 11, सरसों की प्रजाति केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) व अलसी की एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) प्रजाति हैं। इन फसल प्रजातियों की अपनी अलग पहचान है। इन्हें विकसित करने से किसान कम समय व कम लागत में अच्छी पैदावार ले सकेंगे। बीजों के इस विशेष प्रकार को पूरे प्रदेश में पैदावार के लिए राज्य बीज विमोचन समिति, लखनऊ ने मान्यता प्रदान कर दी है। कुलपति ने प्रसन्नता व्यक्त की और वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा है कि विकसित प्रजातियां रोगरोधी व प्रदेश के अनुकूल है।

ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गेहूं की प्रजाति के-1711

इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. सोमबीर सिंह व उनकी टीम ने बताया कि यह प्रदेश के ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई है। इसका उत्पादन 38 से 40 कुंतल प्रति हेक्टेयर है जबकि यह प्रजाति 125 से 129 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसमें प्रोटीन 13 से 14 प्रतिशत पाई जाती है जो अन्य प्रजातियों की तुलना में बहुत अधिक है। यह गेहूं की प्रजाति सभी रोग जैसे सभी स्तर व पत्ती झुलसा के प्रति रोगरोधी है।

अलसी की प्रजाति एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा)

अलसी की इस प्रजाति को विकसित करने वाली वैज्ञानिक डॉ. नलिनी तिवारी व उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों के लिए यह प्रजाति विकसित की गई है। इसकी उपज 20 से 28 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा यह प्रजाति 128 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। तेल की मात्रा 35 फीसदी है जो बेक की तुलना में 11.22 फीसदी अधिक है। रोग व कीटों के प्रति सहनशील है तथा फूलों का रंग भूरा है।

सरसों की केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव)

इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. महक सिंह व उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लिए अति विलंब की दशा में (20 नवंबर से 30 नवंबर) तक बुवाई कर सकते हैं। यह प्रजाति 120 से 125 दिनों में पक कर तैयार होती है। पौधे की ऊंचाई 185 से 195 सेंटीमीटर है। उन्होंने बताया कि उत्पादन क्षमता 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा तेल की मात्रा 39 से 40 फीसदी तक है। उन्होंने कहा कि इसका दाना मोटा है और 1000 दानों का वजन लगभग 4.0 से 4.5 ग्राम है। यह पूर्वी के विभिन्न उत्तरपूर्व क्षेत्रों में सफलतापूर्वक परीक्षण की जा चुकी है। इसमें कीड़े व रोगों का प्रकोप अन्य की अपेक्षा कम होता है। चाय है इसमें कोहरे का प्रभाव भी कम होता है।

खुश हुआ विश्वविद्यालय परिवार : विश्वविद्यालय के संयुक्त निदेशक शोध डॉ. एसके सिंह, निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश, विमोचन व सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र, डॉ. मोहम्मद शमीम आदि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए संबंधित वैज्ञानिकों और उनकी टीम को बधाई दी है।

आज
महानगर
5

गेहूं, सरसों और अलसी की नयी प्रजातियां विकसित

ऊसर भूमि पर पैदावार बढ़ाने में सहायक होगी गेहूं की नई प्रजाति

कानपुर, 1 दिसम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) ने उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए तीन नई प्रजातियों की सौगात दी है। सीएसए ने किसानों के लिए गेहूं, सरसों व अलसी की नई प्रजाति दी है। नई प्रजाति में रोगमुक्त होने के साथ कम समय, कम लागत में अधिक

- रोगमुक्त, कम समय, कम लागत में अधिक पैदावार देगी

- प्रदेश सरकार ने जारी किया नोटिफिकेशन, अगले वर्ष बीज खरीद सकेंगे किसान

पैदावार होगी। यूपी सरकार ने इन तीनों प्रजातियों को बीती रात जारी कर दिया है। अब अगले वर्ष से किसान इन प्रजातियों के बीजों की खरीदारी कर सकेंगे। सीएसए के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह के निर्देशन में कृषि वैज्ञानिक निरंतर नई प्रजातियों पर शोध के साथ निरंतर कार्य कर रहे हैं। पिछले कई वर्षों की मेहनत के बाद कृषि वैज्ञानिकों ने गेहूं की नई प्रजाति के-1711, सरसों की नई प्रजाति केएमआरएल-15-6 (आजाद गौरव) और अलसी की नई प्रजाति एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) विकसित की है। कुलपति का कहना है कि राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ ने मान्यता प्रदान कर दी है। ये तीनों नई प्रजातियां किसानों की पैदावार बढ़ाने के साथ ही आमदनी भी बढ़ेगी। सीएसए के शोध निदेशक डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. खलील खान, सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र एवं डॉ मोहम्मद शमीम आदि ने इन प्रजातियों को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों और उनकी टीम को बधाई दी है।

इस प्रजाति गेहूं (के-1711) को वैज्ञानिक डॉ. सोमबीर सिंह व उनकी टीम ने विकसित की है। वैज्ञानिक के मुताबिक यह प्रजाति प्रदेश के ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से है। इसका उत्पादन 38 से 40 कुंतल प्रति हेक्टेअर है। यह प्रजाति 125 से 129 दिन में तैयार हो जाती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 13 से 14 फीसदी पाई जाती है, जोकि अन्य प्रजातियों की तुलना में बहुत अधिक है। यह प्रजाति सभी प्रकार के रोगों से मुक्त है। इस प्रजाति आजाद गौरव सरसों (केएमआरएल-15-6) को वैज्ञानिक डॉ. महक सिंह व उनकी टीम ने विकसित किया है। प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त इस प्रजाति को अति विलंब की दशा में (20 से 30 नवंबर) में भी बुआई कर सकते हैं। यह प्रजाति 120 से 125 दिन में तैयार हो जाती है। इसमें पौधों की ऊंचाई 185 से 195 सेमी होती है। उत्पादन क्षमता 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेअर है और तेल की मात्रा 39 से 40 फीसदी है। इसका दाना मोटा होता है। यह रोगमुक्त है और इसमें कोहरे का प्रभाव भी कम होता है। इस प्रजाति आजाद प्रज्ञा अलसी (एलसीके-1516) को वैज्ञानिक डॉ. नलिनी तिवारी ने विकसित की है। इसे उत्तर प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों के लिए तैयार किया गया है। इसकी उपज 20 से 28 कुंतल प्रति हेक्टेअर है। यह 128 दिन में तैयार हो जाती है और तेल की मात्रा 35 फीसदी है, जो अन्य की तुलना में 11.22 फीसदी अधिक है। यह रोग व कीटों के प्रति सहनशील है और फूलों का रंग भूरा है।

अमर उजाला कानपुर 02/12/2021

उपलब्धि

सीएसए के वैज्ञानिकों ने विकसित कीं प्रदेश की जलवायु के अनुकूल प्रजातियां, रोग भी नहीं लगेंगे

कम समय में अच्छी पैदावार देंगी गेहूं, सरसों की नई प्रजातियां

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गेहूं, सरसों और अलसी की नई प्रजातियां विकसित की हैं। नई प्रजातियां फसल को रोगों से बचाने के साथ-साथ प्रदेश की जलवायु के अनुकूल हैं।

कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने कहा कि इन प्रजातियों के विकसित होने से किसानों को मुनाफा ज्यादा होगा। गेहूं की के-1711, सरसों की केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) और अलसी की एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) प्रजाति विकसित की गई हैं। ये प्रजातियां कम समय में अच्छी पैदावार देंगी। प्रदेश में इन प्रजातियों को बोने के लिए राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ ने मान्यता दे दी है। कुलपति, निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश, संयुक्त निदेशक शोध डॉ. एसके विश्वास ने वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

ऊसर में लहलहाएगी के-1711 प्रजाति

- इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. सोमबीर सिंह ने बताया कि प्रदेश के ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए यह प्रजाति तैयार की गई है। इसका उत्पादन 38 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति 125 से 129 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसमें प्रोटीन 13 से 14 प्रतिशत पाया जाता है जो अन्य प्रजातियों की तुलना में अधिक है। प्रजाति में रस्ट और पत्ती झुलसा रोग भी नहीं लगता है।

देरी से कर सकेंगे आजाद गौरव की बुआई

सरसों को आजाद गौरव प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ. महक सिंह ने बताया कि इस प्रजाति की अति विलंब की दशा में (20 नवंबर से 30 नवंबर) तक बुआई की जा सकती है। यह 120 से 125 दिनों में पककर तैयार होती है। उत्पादन क्षमता 22 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और तेल की मात्रा 39 से 40 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि इसका दाना मोटा है। इसमें कीड़े और रोगों का प्रकोप अन्य प्रजातियों की अपेक्षा कम होता है। कोहरे से भी काफी हद तक यह प्रजाति बची रहती है।

128 दिनों में तैयार हो जाती है आजाद प्रज्ञा

- अलसी की इस प्रजाति को विकसित करने वाली वैज्ञानिक डॉ. नलिनी तिवारी ने बताया कि प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों के लिए यह प्रजाति विकसित की गई है। इसकी उपज 20 से 28 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है और 128 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। तेल की मात्रा 35 प्रतिशत है जो अन्य की तुलना में 11.22 प्रतिशत अधिक है। यह प्रजाति रोग और कीटों के प्रति सहनशील है।

DT दीनार टाइम्स | कानपुर न्यूज | www.dinartimes.in | 7
कानपुर, बुधवार, 1 दिसंबर 2021

सी एसए ने विकसित की गेहूं, सरसों एवं अलसी की नई प्रजाति

किस्में, फसलों को रोगों से बचाने एवं ऊसर, बंजर भूमियों में भी कारगर

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर ने गेहूं, सरसों एवं अलसी के बेहतर बीज विकसित किए हैं। यह फसल को रोगों से बचाने के साथ-साथ प्रदेश के वातावरण के अनुकूल हैं।कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने इन विशेष प्रकार के बीजों को विकसित कर इतिहास रचा है।इन प्रजातियों के विकसित होने से किसानों को बेहतर आय व फसलों की सुरक्षा का और भरोसा बढ़ेगा। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की प्रजातियों में गेहूं की के-17 11, सरसों की प्रजाति केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) एवं अलसी की एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) प्रजाति शामिल है। इन फसल प्रजातियों की अपनी अलग पहचान है।इनको विकसित करने से किसान कम समय व कम लागत में अच्छी पैदावार ले सकेंगे। बीजों के इस विशेष प्रकार को पूरे प्रदेश में पैदावार हेतु राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई है।कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त की एवं वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा है कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियां रोगरोधी एवं प्रदेश के अनुकूल की गई है।

ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई गेहूं की प्रजाति के-1711

इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉक्टर सोमबीर सिंह एवं उनकी टीम ने बताया कि यह प्रदेश के ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई है इसका उत्पादन 38 से 40 कुंतल प्रति हेक्टेयर है जबकि यह प्रजाति 125 से 129 दिनों में बनकर तैयार हो जाती है। उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 13 से 14 प्रतिशत पाई जाती है। जो कि अन्य प्रजातियों की तुलना में बहुत अधिक है। यह गेहूं की प्रजाति सभी रोग जैसे- सभी रस्ट एवं पत्ती झुलसा के प्रति रोगरोधी है।

अति विलंब दशा में बुवाई हेतु विकसित की गई सरसों

इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ महक सिंह एवं उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लिए अति विलंब की दशा में (20 नवंबर से 30 नवंबर) तक बुवाई कर सकते हैं।यह प्रजाति 120 से 125 दिनों में पक कर तैयार होती है पौधे की ऊंचाई 185 से 195 सेंटीमीटर है उन्होंने बताया कि उत्पादन क्षमता 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। तथा तेल की मात्रा 39 से 40% तक है। उन्होंने कहा कि दाना इसका मोटा है।तथा 1000 दानों का वजन लगभग 4.0 से 4.5 ग्राम है। उन्होंने बताया कि यह उत्तर प्रदेश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में सफलतापूर्वक परीक्षण की जा चुकी है।

खुश हुआ विश्वविद्यालय परिवार
विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉक्टर एचजी प्रकाश,संयुक्त निदेशक शोध डॉ एसके विश्वास एवं सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र एवं डॉ मोहम्मद शमीम आदि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए संबंधित वैज्ञानिकों और उनकी टीम को बधाई दी है।

इसमें कीड़े व रोगों का प्रकोप अन्य की अपेक्षा कम होता है। साथ ही इसमें कोहरे का प्रभाव भी कम होता है।

सिंचित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई अलसी की प्रजाति

अलसी की इस प्रजाति को विकसित करने वाली वैज्ञानिक डॉक्टर नलिनी तिवारी एवं उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों के लिए यह प्रजाति विकसित की गई है। इसकी उपज 20 से 28 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा यह प्रजाति 128 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। तथा तेल की मात्रा 35% है जो चेक की तुलना में 11.22% अधिक है रोग एवं कीटों के प्रति सहनशील है तथा फूलों का रंग भूरा है।

Sign in to edit and save changes to this file.

उत्तर प्रदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | देश-विदेश
जन एक्सप्रेस
www.janexpresslive.com/epaper | लखनऊ | बुधवार | 01 दिसंबर, 2021

गेहूं, सरसों एवं अलसी के बेहतर बीज विकसित

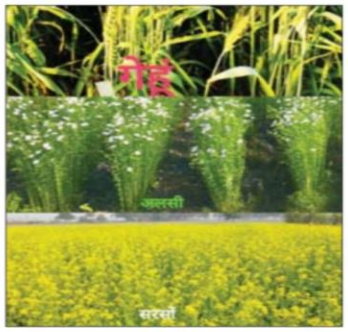

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा फसल को रोगों से बचाने के साथ-साथ प्रदेश के वातावरण के लिए अनुकूलित गेहूं, सरसों एवं अलसी के बेहतर बीज कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के नेतृत्व में विकसित किए गए है।
विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की प्रजातियों में गेहूं की के-17 11, सरसों की प्रजाति केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) एवं अलसी की एलसीके- 1516 (आजाद प्रज्ञा) प्रजाति शामिल है। इन फसल प्रजातियों की अपनी अलग पहचान है। इनको विकसित करने से किसान कम समय व कम लागत में अच्छी पैदावार ले सकेंगे। बीजों के इस विशेष प्रकार को पूरे प्रदेश में पैदावार के लिए राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई है। इस अवसर पर कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियां रोगरोधी एवं प्रदेश के अनुकूल की गई है। विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ एचजी प्रकाश, संयुक्त निदेशक शोध डॉ. एस.के. विश्वास, सहायक निदेशक शोध डॉ. मनोज मिश्र और डॉ. मोहम्मद शमीम ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए संबंधित वैज्ञानिकों और उनकी टीम को बधाई दी।

दैनिक हिंदुस्तान कानपुर 02/12/2021

सीएसए ने दी गेहूं, सरसों व अलसी की नई प्रजाति

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) ने प्रदेश के किसानों को एक साथ गेहूं, सरसों व अलसी की नई प्रजाति दी है। इसमें रोगमुक्त होने के साथ कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन देने वाली खूबियां हैं। प्रदेश सरकार ने इन तीनों प्रजातियों को मंगलवार देर रात जारी कर दिया है। अब अगले वर्ष से किसान इन प्रजातियों के बीजों की खरीदारी कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देशन में वैज्ञानिकों ने गेहूं की नई प्रजाति के-1711, सरसों की नई प्रजाति केएमआरएल-15-6 (आजाद गौरव) और अलसी की नई प्रजाति एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) विकसित की है। कुलपति ने बताया कि राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ ने मान्यता प्रदान कर दी है। विवि के शोध निदेशक डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. खलील खान समेत सभी वैज्ञानिकों ने बधाई दी है।

गेहूं (के-1711) ः इस प्रजाति को वैज्ञानिक डॉ. सोमबीर सिंह व उनकी टीम ने विकसित की है। डॉ. सिंह के मुताबिक यह प्रजाति प्रदेश के ऊषर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र
जनमत टुडे
वर्ष:12 | अंक:320 | देहरादून, बुधवार, 01 दिसंबर, 2021 | पृष्ठ:08

चंद्रशेखर आजाद कृषि विवि ने विकसित की गेहूं, सरसों एवं अलसी की नई किस्में

डेस्क न्यूज (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर ने गेहूं, सरसों एवं अलसी के बेहतर बीज विकसित किए हैं यह फसल को रोगों से बचाने के साथ-साथ प्रदेश के वातावरण के अनुकूल हैं कुलपति डॉ. डीआर सिंह के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने इन विशेष प्रकार के बीजों को विकसित कर इतिहास रचा है इन प्रजातियों के विकसित होने से किसानों की बेहतर आय व फसलों की सुरक्षा का और भरोसा बढ़ेगा विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की प्रजातियों में गेहूं की के-1711, सरसों की प्रजाति केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) एवं अलसी की एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) प्रजाति शामिल है इन फसल प्रजातियों की अपनी अलग पहचान है इनको विकसित करने से किसान कम समय व कम लागत में अच्छी पैदावार ले सकेंगे बीजों के इस विशेष प्रकार को पूरे प्रदेश में पैदावार हेतु राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई है कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त की एवं वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा है कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियां रोगरोधी एवं प्रदेश के अनुकूल की गई है।

ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई गेहूं की प्रजाति के-1711: इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉक्टर सोमबीर सिंह एवं उनकी टीम ने बताया कि यह प्रदेश के ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई है इसका उत्पादन 38 से 40 कुंतल प्रति हेक्टेयर है जबकि यह प्रजाति 125 से 129 दिनों में बनकर तैयार हो जाती है उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 13 से 14 प्रतिशत पाई जाती है जो कि अन्य प्रजातियों की तुलना में बहुत अधिक है। यह गेहूं की प्रजाति सभी रोग जैसे-सभी रस्ट एवं पत्ती झुलसा के प्रति रोगरोधी है।

अति विलंब दशा में बुवाई हेतु विकसित की गई सरसों की केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) : इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ महक सिंह एवं उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लिए अति विलंब की दशा में (20 नवंबर से 30 नवंबर) तक बुवाई कर सकते है यह प्रजाति 120 से 125 दिनों में पक कर तैयार होती है पौधे की ऊंचाई 185 से 195 सेंटीमीटर है उन्होंने बताया कि उत्पादन क्षमता 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा तेल की मात्रा 39 से 40% तक है उन्होंने कहा कि दाना इसका मोटा है तथा 1000 दानों का वजन लगभग 4.0 से 4.5 ग्राम है उन्होंने बताया कि यह उत्तर प्रदेश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में सफलतापूर्वक परीक्षण की जा चुकी है इसमें कीड़े व रोगों का प्रकोप अन्य की अपेक्षा कम होता है साथ ही इसमें कोहरे का प्रभाव भी कम होता है।

सिंचित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई अलसी की प्रजाति एलसीके-1516: अलसी की इस प्रजाति को विकसित करने वाली वैज्ञानिक डॉ. नलिनी तिवारी एवं उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों के लिए यह प्रजाति विकसित की गई है इसकी उपज 20 से 28 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा यह प्रजाति 128 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है तथा तेल की मात्रा 35% है जो चेक की तुलना में 11.22% अधिक है रोग एवं कीटों के प्रति सहनशील है तथा फूलों का रंग भूरा है।

उपलब्धि पर प्रसन्न हुआ विश्वविद्यालय परिवार: विवि के निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश, संयुक्त निदेशक शोध डॉ एसके विश्वास एवं सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र एवं डॉ मोहम्मद शमीम आदि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए संबंधित वैज्ञानिकों और उनकी टीम को बधाई दी है।

अब ऊसर और बंजर में भी लहलहाएंगी फसलें

सीएसए विवि में तैयार हुईं गेहूं, सरसों और अलसी की नई प्रजातियां

जासं,कानपुर :कृषि क्षेत्र से जुड़ाव रखने वालों के लिए अच्छी खबर है। अब ऊसर और बंजर भूमि में भी फसलें लहलहाएंगी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में अब गेहूं, सरसों व अलसी की नई प्रजातियां तैयार की गई हैं। ये फसल को रोगों से बचाने, ऊसर और बंजर भूमि के लिए मुफीद हैं, जबकि प्रदेश के वातावरण के लिए पूरी तरह से अनुकूल हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति डा. डीआर सिंह के नेतृत्व में वैज्ञानिकों ने इन विशेष प्रजातियों के बीज विकसित करने में सफलता पाई है। ये प्रजातियां गेहूं की के-17 11, सरसों की केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) और अलसी की

तैयार अलसी की फसल • जागरण

एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) हैं। इनसे किसान कम समय व कम लागत में अच्छी पैदावार ले सकेंगे। गुरुवार को यह जानकारी कुलपति ने दी। उन्होंने बताया कि बीजों के इस विशेष प्रकार को पूरे प्रदेश में पैदावार के लिए राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ ने मान्यता दे दी है। इस उपलब्धि पर विवि के निदेशक शोध डा. एचजी प्रकाश, संयुक्त निदेशक शोध डा. एसके विश्वास व सहायक निदेशक शोध डा.मनोज मिश्र समेत अन्य वैज्ञानिकों ने हर्ष जताया है।

तकनीक

- सभी रोगों से बचाने में मददगार होंगी ये प्रजातियां, ज्यादा होगा उत्पादन
- अधिक बीजों की पैदावार को राज्य बीज विमोचन समिति ने दी मंजूरी

गेहूं की प्रजाति के-17 11: ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए। इसे विकसित करने वाले वैज्ञानिक डा. सोमबीर सिंह व उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के ऊसर प्रभावित क्षेत्रों में इसका उत्पादन 38 से 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। 125 से 129 दिनों में फसल तैयार हो जाती है। इसमें प्रोटीन 13 से 14 प्रतिशत पाई जाती है। इसमें रस्ट एवं पत्ती झुलसा जैसे रोग नहीं होंगे। इसको विकसित करने वाले वैज्ञानिक डा. महक सिंह एवं उनकी टीम ने बताया, प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लिए अति विलंब की दशा में (20 नवंबर से 30 नवंबर) तक बोआई कर सकते हैं। यह प्रजाति 120 से 125 दिनों में पक कर तैयार होती है। पौधे की ऊंचाई 185 से 195 सेंटीमीटर है। इसकी उत्पादन क्षमता 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। इसमें तेल की मात्रा 39 से 40 प्रतिशत तक है। इसका दाना मोटा है। इस प्रजाति को विकसित करने वाली वैज्ञानिक डा. नलिनी तिवारी एवं उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों के लिए इसे विकसित किया गया है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय की नई उपलब्धि

विकसित की गेहूं, सरसों एवं अलसी की नई किस्में

कानपुर(विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर ने गेहूं, सरसों एवं अलसी के बेहतर बीज विकसित किए हैं यह फसल को रोगों से बचाने के साथ-साथ प्रदेश के वातावरण के अनुकूल हैं कुलपति डॉ. डीआर सिंह के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने इन विशेष प्रकार के बीजों को विकसित कर इतिहास रचा है इन प्रजातियों के विकसित होने से किसानों की बेहतर आय व फसलों की सुरक्षा का और भरोसा बढ़ेगा विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की प्रजातियों में गेहूं की के-1711, सरसों की प्रजाति केएमआरएल 15-6 (आजाद गौरव) एवं अलसी की एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) प्रजाति शामिल है इन फसल प्रजातियों की अपनी अलग पहचान है इनको विकसित करने से किसान कम समय व कम लागत में अच्छी पैदावार ले सकेंगे बीजों के इस विशेष प्रकार को पूरे प्रदेश में पैदावार हेतु राज्य बीज विमोचन समिति लखनऊ द्वारा मान्यता प्रदान कर दी गई है कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त की एवं वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा है कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियां रोगरोधी एवं प्रदेश के अनुकूल की गई है

ऊसर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई गेहूं की प्रजाति के-1711: इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉक्टर सोमबीर सिंह एवं उनकी टीम ने बताया कि यह प्रदेश के ऊषर प्रभावित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई है इसका उत्पादन 38 से 40 कुंतल प्रति हेक्टेयर है जबकि यह प्रजाति 125 से 129 दिनों में बनकर तैयार हो जाती है उन्होंने बताया कि इसमें प्रोटीन 13 से 14 प्रतिशत पाई जाती है जो कि अन्य प्रजातियों की तुलना में बहुत अधिक है। यह गेहूं की प्रजाति सभी रोग जैसे-सभी रस्ट एवं पत्ती झुलसा के प्रति रोगरोधी है

अति विलंब दशा में बुवाई हेतु विकसित की गई सरसों की केएमआरएल

15-6 (आजाद गौरव) : इस प्रजाति को विकसित करने वाले वैज्ञानिक डॉ महक सिंह एवं उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सभी क्षेत्रों के लिए अति विलंब की दशा में (20 नवंबर से 30 नवंबर) तक बुवाई कर सकते हैं यह प्रजाति 120 से 125 दिनों में पक कर तैयार होती है पौधे की ऊंचाई 185 से 195 सेंटीमीटर है उन्होंने बताया कि उत्पादन क्षमता 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा तेल की मात्रा 39 से 40इतक है उन्होंने कहा कि दाना इसका मोटा है तथा 1000 दानों का वजन लगभग 4.0 से 4.5 ग्राम है उन्होंने बताया कि यह उत्तर प्रदेश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में सफलतापूर्वक परीक्षण की जा चुकी है इसमें कीड़े व रोगों का प्रकोप अन्य की अपेक्षा कम होता है साथ ही इसमें कोहरे का प्रभाव भी कम होता है

सिंचित क्षेत्रों के लिए विकसित की गई अलसी की प्रजाति एलसीके-1516 (आजाद प्रज्ञा) : अलसी की इस प्रजाति को विकसित करने वाली वैज्ञानिक डॉ. नलिनी तिवारी एवं उनकी टीम ने बताया कि प्रदेश के सिंचित क्षेत्रों के लिए यह प्रजाति विकसित की गई है इसकी उपज 20 से 28 कुंतल प्रति हेक्टेयर है तथा यह प्रजाति 128 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है तथा तेल की मात्रा 35इहै जो चेक की तुलना में 11.22इअधिक है रोग एवं कीटों के प्रति सहनशील है तथा फूलों का रंग भूरा है

उपलब्धि पर प्रसन्न हुआ विश्वविद्यालय परिवार : विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश, संयुक्त निदेशक शोध डॉ एसके विश्वास एवं सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र एवं डॉ मोहम्मद शमीम आदि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए संबंधित वैज्ञानिकों और उनकी टीम को बधाई दी है